# श्रीनवद्वीपधाम महात्मय

SGD

# श्रीलगुरुदेव

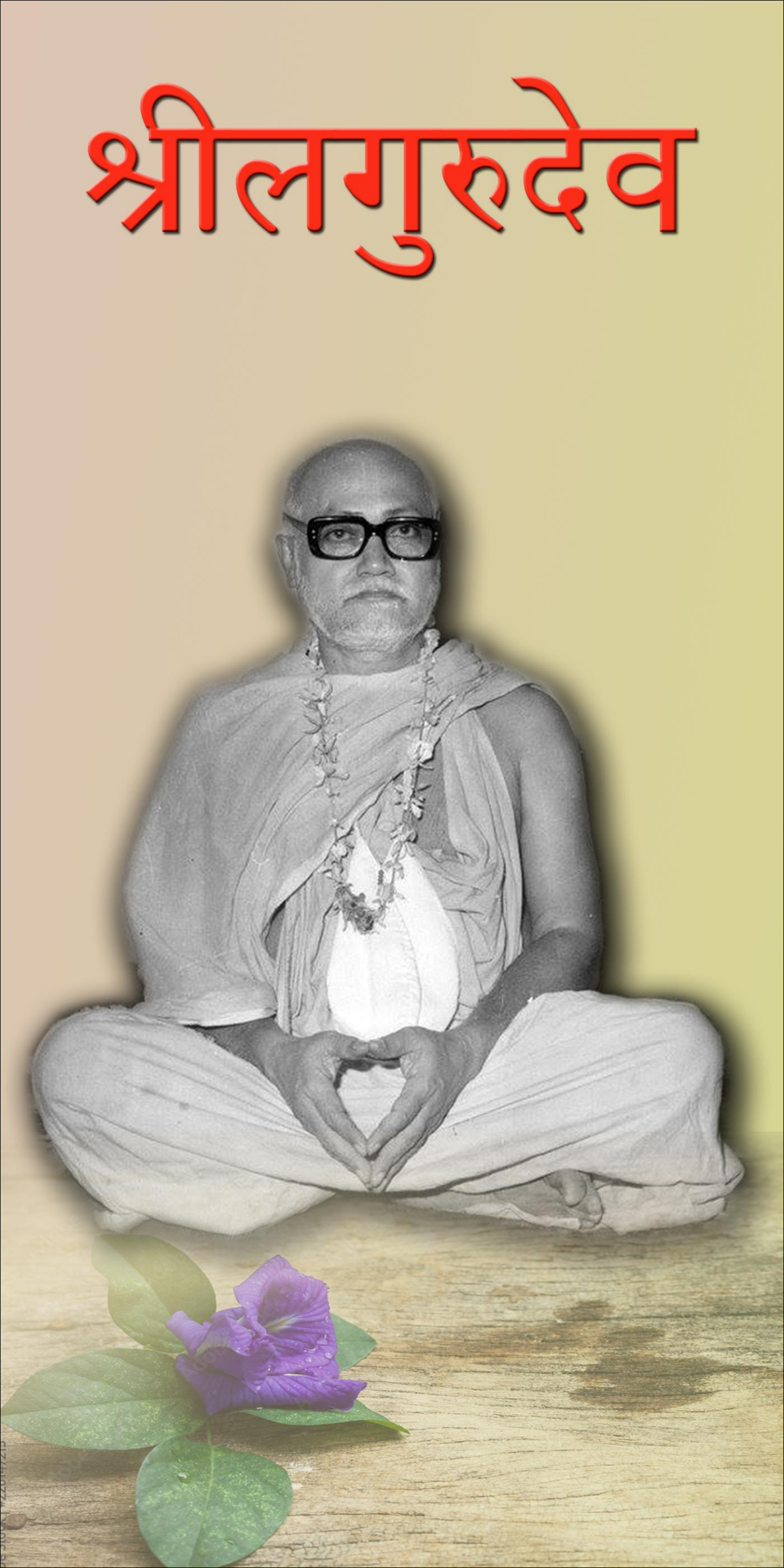

श्रीलगुरुदेव

श्रीश्रीगुरु- गौरांगौ जयतः

# श्रीयोगपीठ

श्रीमायापुर में श्रीगौरांग महाप्रभु का जन्मस्थान महायोग पीठ नित्य विराजित है। इस श्रीमायापुर श्रीयोगपीठ की महिमा के संबंध में ‘‘श्रीभक्तिरत्नाकर' ग्रन्थ की बारहवीं तरंग में कहते हैं —

"श्रीनवद्वीप मध्ये नामे ग्राम।
यथा जन्मिलेन गौरचन्द्र भगवान्।।

यैछे वृन्दावने योगपीठ सुमधुर।
तैछे नवद्वीपे योगपीठ मायापुर ।।"

अर्थात् श्रीनवद्वीप के मध्य में श्रीमायापुर नामक दिव्य गाँव है, जहाँ भगवान् श्रीगौरचन्द्रजी ने जन्म ग्रहण किया था। जिस प्रकार वृन्दावन में सुमधुर योगपीठ है, उसी प्रकार श्रीनवद्वीप में श्रीमायापुर योगपीठ है।

शास्त्रों में वर्णित, देवताओं के द्वारा वन्दित इस परम पवित्र स्थान में स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण, 1407 शकाब्द, फाल्गुनी पूर्णिमा तिथि में, श्रीहरिसंकीर्तन के बीच सायंकाल में, कलिहत जीव - गणों के उद्धार के लिए श्रीगौरांग महाप्रभु के रूप में, श्रीजगन्नाथ मिश्र के घर, श्रीशचीमाता के गर्भ से आविर्भूत हुए

थे। बड़े सुन्दर व ऊँचे श्रीयोगपीठ श्रीमन्दिर के तीन प्रकोष्ठ के बीच वाले में श्रीगौर - लक्ष्मीप्रिया - विष्णुप्रिया विराजमान हैं, उत्तर के प्रकोष्ठ में पंचतत्व एवं दक्षिण प्रकोष्ठ में श्रीगौरसुन्दरजी व श्रीराधामाधव जी के विग्रह एवं श्रीमन्दिर की नींव खोदते समय, स्वयं प्रकटित श्रीअधोक्षज भगवान का विग्रह भी विराजमान हैं।

(क) **श्रीमद्भक्तिविनोद ठाकुर का स्मृति मन्दिर** — श्रीयोगपीठ श्रीमन्दिर के प्रवेशद्वार के दक्षिण की तरफ यह मन्दिर अवस्थित है। जगत् में शुद्धभक्ति स्रोत के पुन: प्रवाह के

भगीरथ गौड़ीय जगत के स्तम्भ एवं श्रीमहाप्रभु के आविर्भाव स्थान के प्रकाशक

श्रीमद् भक्तिविनोद ठाकुर जी का श्रीविग्रह इस मन्दिर में विराजमान है।

( ख ) **प्राचीन नीम वृक्ष** — कहते हैं, इस नीम के पेड़ के नीचे ही श्रीमन्महाप्रभु आविर्भूत हुए थे। यहाँ के पूजा स्थल पर नीम पेड़ के नीचे सूतिकागृह में खाट पर सोये शिशु निमाई एवं उनके सम्मुख बैठे श्रीजगन्नाथ मिश्र और श्रीशचीमाता जी हैं।

(ग ) **श्रीक्षेत्रपाल शिवालय** — श्रीयोगपीठ के ईशान कोण में श्रीधाम

रक्षक के रूप में श्रीक्षेत्रपाल शिव, नित्य पूजित होते हैं।

(घ) **श्रीनृसिंहदेव का मन्दिर** — इस श्रीमन्दिर में भक्तिविघ्नविनाशक, श्रीनृसिंहदेव जी और श्रीगौर - गदाधर जी के विग्रह विराजमान हैं।

(ङ) **श्रीगौरकुण्ड** — मथुरा मण्डल में जिस प्रकार श्रीश्याम कुण्ड और श्रीराधाकृण्ड की महिमा है, उसी प्रकार उनसे अभिन्न व्रजभूमि, श्रीनवद्वीपमण्डल में श्रीराधाकृष्णमिलिततनु श्रीगौरहरि के कुण्ड की महिमा है। श्रीगौरकुण्ड का जल मस्तकपर धारण करने से, जीवों के अनर्थ दूर हो जाते हैं तथा

उनके हृदय में श्रीगौरहरि और श्रीगौरधाम में सुनिर्मल भक्ति उदित होती है।

(च) **ठाकुर श्रीभक्तिविनोद इन्सीट्यूट** — श्रीगौरकुण्ड के किनारे श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी प्रभुपादजी द्वारा प्रतिष्ठित विद्यालय है। अपराविद्या के अनुशीलन से मनुष्य की अनर्थ राशि बढ़ जाती है, इसीलिए श्रील सरस्वती ठाकुर ने उक्त विद्यालय में पराविद्या अनुशीलन की व्यवस्था की थी।

(2) **श्री श्रीवास - अंगन** — यह स्थान श्रीयोगपीठ से 400 हाथ उत्तर

में अवस्थित है। श्रीवास - अंगन में श्रीगौरसुन्दर, पार्षदगण सहित श्रीहरिनाम संकीर्तन करते थे। इस स्थान को संकीर्तन - रासस्थली भी - कहते हैं। श्रीवृन्दावनलीला की रास - स्थली से अभिन्न श्रीनवद्वीपलीला में श्रीवास - अंगन है। श्रीमन्दिर के उत्तर प्रकोष्ठ में भक्तगणसह - - - संकीर्तन में अनुरक्त श्रीगौर - निताई, मध्य प्रकोष्ठ में पार्षदों के साथ श्रीमन्महाप्रभु जी सिंहासनपर विराजमान हैं एवं दक्षिण प्रकोष्ठ में श्रीराधामाधव जी विराजमान हैं।

(क) श्रीमद्भक्ति विलास ठाकुरजी की समाधि ।

(ख) श्रीमद्भक्ति श्रीरूप पुरी महाराज जी की समाधि।

(ग) खोल भांगा डांगा श्रीवास - अंगन के सम्मुख स्थान ही, खोलभांगा डांगा है। इस स्थान पर नवद्वीप के तत्कालीन शासनकर्ता चांदकाज़ी ने श्रीमहाप्रभुजी के संकीर्तन में अनुरक्त भक्तगणों के ऊपर अत्याचार किया था एवं उनके कीर्तन का मृदंग तोड़ दिया था तथा श्रीगौरांगदेवजी ने, श्रीनृसिंह मूर्ति धारण करके रात में स्वप्न द्वारा भय दिखाकर उसे सुधार दिया था। तब से काज़ी ने कभी भी संकीर्तन में बाधा नहीं दी एवं भविष्य में उस के

वंश के लोग कीर्तन में बाधा प्रदान न करें, इसीलिये उसने अपने वंश को भी फरमान जारी कर दिया था।

मृदंग को स्थानीय भाषा में 'खोल' कहते हैं तथा तोड़ने को भागना कहते हैं। चूंकि इस स्थान पर काज़ी ने भक्तों का मृदंग तोड़ा था इसलिए यह स्थान स्थानीय भाषा के अनुसार "खोलभांगा डांगा " नाम से प्रसिद्ध हुआ है।

( 3 ) **श्री अद्वैत भवन** – यह स्थान श्रीवास अंगन से 40 हाथ उत्तर में अवस्थित है। इस स्थान पर श्री अद्वैताचार्य जी ने दुर्दशाग्रस्त कलिहत जीवों के उद्धार के लिए

गंगाजल व तुलसी द्वारा व पान्चरात्रिक विधानानुसार अर्चन करके, श्रीगौरसुन्दर जी को भूतल पर प्रकट कराया था। श्रीमन्दिर में श्रीगौरांग महाप्रभु का श्रीविग्रह एवं उनकी सेवा में तन्मयता से संलग्न श्री अद्वैत प्रभु जी विराजित हैं।

( क ) **श्रीगदाधर अंगन** — श्री अद्वैत प्रभु के मन्दिर से 20 हाथ पूर्व की तरफ श्रीगदाधर पंडित गोस्वामी का आंगन है। मन्दिर में श्रीगौर - गदाधर श्रीविग्रह विराजित हैं।

(4) श्रीचन्द्रशेखर भवन - श्रीचन्द्रशेखर आचार्य, निमाई पंडित के मौसा थे। श्रीचन्द्रशेखर भवन –

‘व्रजपत्तन' के नाम से भी प्रसिद्ध है। इसी स्थान पर श्रीमहाप्रभु जी ने देवीभाव में व्रजलीला के नाटक का अभिनय किया था। इसीलिये इस स्थान को 'व्रजपत्तन' भी कहते हैं।

जगद्गुरु ॐ विष्णुपाद श्री श्रीमद् भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुर जी ने यहाँ पर दो मंज़िल पक्की भजन- कुटीर का निर्माण करके, वहाँ नैष्ठिक ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए तथा कठोर वैराग्य के साथ, सौ करोड़ महामंत्र का नामयज्ञ सम्पूर्ण किया था एवं इसी स्थान पर श्रीप्रभुपाद जी ने श्रीचैतन्यचरितामृत

के 'अनुभाष्य' की रचना की थी। उनकी इस प्रकार की भजन- निष्ठा ने ही सैंकड़ों व्यक्तियों को महाप्रभु जी के पादपद्मों में आकर्षित किया था। सन् 1918, फाल्गुनी पूर्णिमा तिथि में, त्रिदण्ड संन्यास ग्रहण करके श्रील प्रभुपाद जी ने उक्त गृह में श्रीश्रीगुरु-गौरांग - गान्धर्विका - गिरिधारी श्रीविग्रहगण को प्रकट करके, उसी को 'श्रीचैतन्यमठ' का नाम दिया था। विग्रह प्रकाशित होने के कुछ वर्ष बाद 'श्रीचैतन्य मठ' का सुन्दर श्रीमन्दिर निर्मित हुआ था।

(क) **श्रीचैतन्य मठ** — श्रीचैतन्य मठ के गर्भ मन्दिर में श्री श्रीगुरु -

गौरांग गान्धर्विका - गिरिधारी विग्रहगण विराजमान हैं। श्रीमन्दिर के चारों कोनों में श्री ब्रह्म, रुद्र और सनक संप्रदाय के मध्ययुगीन-आचार्य" — यथाक्रम से श्रीरामानुजाचार्य, श्रीमध्वाचार्य, श्रीविष्णुस्वामी और श्रीनिम्बादित्याचार्य के श्रीविग्रह सेवित होते हैं।

( ख ) श्रीचैतन्य मठ के दक्षिण कोने में, श्रीराधाकुण्ड के किनारे, श्रीगौरकिशोर दास बाबा जी महाराज का समाधि मन्दिर है। इस मन्दिर में श्रीबाबाजी महाराज के अर्चा विग्रह नित्य पूजित होते हैं।

(ग) **श्रील सरस्वती गोस्वामी ठाकुर का समाधि मन्दिर** — श्रीचैतन्य मठ के श्रीमन्दिर एवं श्रीभक्ति विजय भवन के मध्य में, श्रीभक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुर का समाधि मन्दिर है। इस मन्दिर में उनके श्रीविग्रह पूजित होते हैं।

(घ) **श्रीभक्तिविजय भवन** — श्रीचैतन्य मठ के प्रवेशद्वार के साथ ही जो दो मंजिली पक्की बिल्डिंग है, वही श्रीभक्ति विजय भवन है। श्रील सरस्वती गोस्वामी ठाकुर जी श्रीमायापुर में रहने के समय इसी घर में रहकर भजन करते थे।

(5) **पृथुकुण्ड व बल्लालदीर्घिका** — सत्ययुग में शक्त्यावेश अवतार --- पृथु नाम के एक राजा थे। उन्होंने पृथ्वी की ऊँची-नीची जगह को समतल करने की इच्छा से मिट्टी खुदवाई थी। मिट्टी खोदने वाले व्यक्तियों ने वहाँ खड्डा खोदते समय एक ज्योति:पुंज देखा तो तुरंत राजा को सूचित किया। राजा के निकट निवेदन करने पर स्वयं राजा ने उक्त ज्योति:पुंज को प्रत्यक्ष देखा। तब राजा ने ध्यान किया और ध्यानयोग द्वारा जाना कि यह स्थान नवद्वीपमण्डल के अन्तर्गत है। ध्यानयोग में उन्हें ये भी मालूम

पड़ा कि इस स्थान पर कलियुग में भगवान नन्दनन्दन श्रीकृष्ण श्रीराधिकाजी का भाव और कान्ति लेकर अवतीर्ण होंगे। साथ ही भगवान ने उन्हें बताया कि इसका माहात्म्य गुप्त रखना होगा। राजा ने स्वप्न में भगवान के नवद्वीप धाम की महिमा को देखकर वहाँ एक मनोहर कुण्ड का निर्माण कराया तथा उसका नाम 'पृथुकुण्ड' रखा। धीरे- धीरे यह कुण्ड लुप्त होने पर गौड़देश के आखरी हिन्दु राजा श्रीलक्ष्मणसेन ने अपने पूर्वपुरुषों के उद्धार की कामना से उसे संस्कार कराकर उसका नाम 'बल्लालदीर्घिका' रखा। श्रील

भक्तिविनोद ठाकुर जी अपने 'श्रीनवद्वीपधाम - माहात्म्य' ग्रन्थ के छटे अध्याय में लिखते हैं : —

“++ येइ दीर्घिका सुन्दर ।
ताहार माहात्म्य शुन ओहे विज्ञवर ।।

बल्लालदीर्घिका नाम ह येछे एखन ।
सत्ययुगे छिल एइ कत विवरण ।।

पृथुनामे महाराजा उच्च नीच स्थान ।
काटिया पृथ्वी यबे करिल समान ।।

सेइ काले एइस्थान समान करिते ।
महाज्योतिर्मय प्रभा उठे चतुर्भिते ।।

कर्मचारिगण महाराजारे जानाय ।
राजा आसि ज्योति: पुज देखिवारे पाय ।।

शक्त्यावेश अवतार पृथु महाशय।
ध्यानेते जानिल स्थान नवद्वीप हय॥

स्थानेर महात्म्य गुप्त राखिवार तरे।
आज्ञा दिल कर कुण्ड स्थान मनोहरे
॥

ये कुण्ड करिल ताहा पृथुकुण्ड नामे।
विरव्यात हइल सर्व नवद्वीप - धामे॥

स्वच्छ जल पान करि' ग्रामवासिगणे।
कतसुख पाइल तार कहिब केमने॥

परे सेइस्थाने श्रीलक्ष्मणसेन धीर।
दीर्घिका खनन कैल बड़इ गभीर॥

निज पितृलोकेर उद्धार करि' आशा।
बल्लालदीर्घिका नाम करिल प्रकाश॥

ए देख उच्चटिला देखिते सुन्दर ।
लक्षण सेनेर गृह भग्न अतः पर ॥

" + + जो सुन्दर जलाशय देख रहे हो, अब उसका नाम बल्लालदीर्घिका है। सत्ययुग में इसका विवरण इस प्रकार था । पृथु नाम के महाराज जब पृथ्वी का ऊँचा - नीचा स्थान काटकर समान करवा रहे थे, उस समय इस स्थान को समान करते समय चारों तरफ से ज्योतिर्मय प्रभा उठी थी। तब कर्मचारियों ने महाराज को बताया। राजा ने आकर ज्योतिर्मय पुंज को देखा । वैसे महाराज पृथु भगवान के शक्त्यावेश अवतार थे | ध्यान में

बैठकर उन्होंने जान लिया कि यह स्थान नवद्वीप है। उन्होंने उस स्थान पर मनोहर कुण्ड के निर्माण की आज्ञा दे दी, जो कुण्ड बना उसका नाम पृथु कुण्ड हुआ। इस कुण्ड से स्वच्छ जल पान करके ग्रामवासी बड़े सुखी हुए। बाद में उस स्थान पर राजा श्रीलक्षमणसेन ने एक बहुत ही गहरे जलाशय को खुदवाया था। अपने पितृकुल के उद्धार की आशा से उन्होंने उसका नाम बल्लालदीर्घिका रखा।

( 6 ) **श्रीमुरारी गुप्त का भवन** — यह बल्लालदीघि के दक्षिण तटपर अवस्थित है। इस स्थान पर

श्रीमन्महाप्रभुजी के पार्षद - भक्त, श्रीमुरारि गुप्त का घर था। वर्तमान में वहाँ श्रीसीताराम जी का एक मन्दिर विद्यमान है।

(7) **बल्लाल ढिपी** — बल्लालदीघि के उत्तर पूर्व की तरफ वामनपुकुर के निकट ऊँचा स्थान ही श्रीलक्ष्मणसेन की राजधानी तथा उनका विशाल महल है। सेनवंश के राजाओं के महलों के खण्डहर ही आजकल बल्लालढिपी के नाम से जाने जाते हैं। यह स्थान अब भारत सरकार द्वारा संरक्षित है।

( 8 ) **चांदकाज़ी का गृह और समाधि** — यह स्थान श्रीचैतन्य मठ

के उत्तर-पूर्व कोण में, वामनपुकुर बाज़ार के साथ ही संलग्न है। मौलाना सिराजुद्दीन चांदकाजी गौड़देश के राजा हुसेनशाह के उस्ताद एवं नवद्वीप में फौजदार थे| चांदकाजी, श्रीकृष्णलीला में कंस थे। भक्त चांदकाज़ी की समाधि पर लगा हुआ लगभग पांच सौ वर्ष पुराना पुराना गोलोक चंपा फूल का एक वृक्ष अभी भी विराजमान है। चांदकाज़ी के संबंध में श्रील भक्ति विनोद ठाकुर जी "श्रीनवद्वीप धाम - माहात्म्य" नामक ग्रन्थ के छठे अध्याय में लिखते हैं:—

"प्रभु बले, ओहे जीव शुनह वचन
काजिर नगर एइ मथुरा भुवन ।।

हेथा श्रीगौरांगराय कीर्तन करिया ।
काजि निस्तारिल प्रभु प्रेमरत्न दिया।।

श्रीकृष्णलीलाय येइ कंस मथुराय।
गौरांगलीलाय चांदकाजि नाम पाय ।।

एइजन्य प्रभु तारे मातुल बलिल।
भये काजि गौरपदे शरण लइल ।।

कीर्तन आरम्भे काजि मृदंग भांगल।
होसेन साहार बले उतपात करिल ।।

होसेन सा से जरासन्ध गौड़ -
राजेश्वर
ताहार आत्मीय काजि प्रताप
विस्तर।।

प्रभु तारे नृसिंहरूपेते देय भय ।
भये कंससम काजि जड़सड़ हय ।।

तारे प्रेम दिया कैल वैष्णव - प्रधान ।
काजिर निस्तार कथा शुने
भाग्यवान्।।

* * * * *

ऐ देख ओहे जीव काजिर समाधि ।
देखिले जीवेर नाश हय आधि -
व्याधि ।।

'श्रीजीव गोस्वामी जी को श्रीनित्यानन्द प्रभु कहते हैं ओहे जीव ! यह काज़ी नगर मथुरा की तरह ही पवित्र है। यहाँ श्रीगौरांग महाप्रभुजी ने कीर्तन करके व काज़ी को श्रीकृष्ण प्रेम धन देकर, उसका उद्धार किया था । श्रीकृष्णलीला में जो मथुरा में कंस था, श्रीगौरांगलीला में वह

चांदकाज़ी नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसीलिये महाप्रभु जी ने उसको मामा कहकर बुलाया था। हुसैनशाह बादशाह के बलपर काजी ने नवद्वीप में उत्पात मचाया हुआ था । श्रीनवद्वीप में कीर्तन आरम्भ के समय काज़ी ने मृदंग फोड़ दिया परन्तु बाद में भय से श्रीगौरपादपद्मों की शरण ली थी। इधर जरासन्ध ही हुसैनशाह बादशाह होकर गौड़देश का राजा बना । काज़ी चूंकि उसका रिश्तेदार ही था, इसलिए हुसैनशाह के राज्य में काज़ी का बड़ा दबदबा था । श्रीमन्महाप्रभु जी ने उसे श्रीनृसिंहरूप से भय दिखाया। भय से

काज़ी, कंस की तरह जड़वत् हो गया था। बाद में उसे प्रेम देकर महाप्रभुजी ने उसे वैष्णव बना दिया था। यही कारण है कि भाग्यवान लोग काज़ी के निस्तार की कथा सुनते हैं।

* * * *

ओहे जीव! यह काजी की समाधि देखो। इसको देखकर जीवों की आधि-व्याधि नाश हो जाती है।

(9) **महाप्रभु जी का निज घाट** — श्रीमन्महाप्रभुजी के समय गंगा, योगपीठ के निकट बहती थी। यह घाट, श्रीयोगपीठ के निकट प्राचीन गंगा के बीच में अवस्थित है। इस गंगा घाटपर श्रीमहाप्रभु जी भागीरथी के

जल में बहुत जलक्रीड़ा करते थे। यमुना का ऐसा सौभाग्य देखकर, गंगा जी ने भी उस सौभाग्य को प्राप्त करने के लिए बहुत दिनों तक तपस्या की। तपस्या के फलस्वरूप श्रीकृष्णचन्द्र जी ने उसे दर्शन देकर कहा था कि जब मैं श्रीगौररूप में अवतीर्ण होऊँगा, तब तुम्हें ये सौभाग्य प्रदान करूँगा । इसी कारण से श्रीमहाप्रभु जी गंगा जी के इस घाट पर जल विहार करते थे। -

( 10 ) **माधाई घाट** — यह घाट श्रीमहाप्रभुजी के घाट से 60 हाथ उत्तर में अवस्थित है। पतितपावन श्रीनिताई- गौरांग की कृपा से, जगाई-

माधाई का उद्धार हुआ था। माधाई, श्रीनित्यानन्द प्रभु जी के सिर पर घड़े का टुकड़ा मारने का अपराध स्मरण करके, बार- बार रोते थे और उनका स्तव करते थे | श्रीनित्यानन्द प्रभु जी ने, माधाई को अपराध से निस्तार के लिये नित्य - प्रति गंगा जी के घाट साफ करने का आदेश दिया था। माधाई उस आदेश को पालन करके अपने हाथ में फावड़ा व झाड़ू इत्यादि लेकर गंगा घाट साफ करते थे। इस कारण से यह घाट "माधाई-घाट" के नाम प्रसिद्ध हुआ।"

'श्रीचैतन्य भागवत' मध्यरखण्ड के पन्द्रहवें अध्याय में वर्णित है :---

“परम कठोर तप करये माधाइ।
'ब्रह्मचारी' हेन ख्याति हइल तथाइ ।।

निरवधि गंगा देखि' थाके गंगाघाटे ।
स्वहस्ते कोदालि लैया आपनेइ वाटे।।
अद्यापिह चिह्न आछे चैतन्य - कृपाय।
'माधाई - घाट' बलि' सर्वलोके गाय।।"

माधाई, परम कठोर तपस्या करते थे, यहाँ तक कि उनकी 'ब्रह्मचारी' नाम से ख्याति हो गई थी। वे हमेशा गंगा जी का दर्शन करते थे एवं गंगा जी के ही घाट पर रहते थे। अपने हाथ से फावड़ा लेकर परिश्रम करते थे। आज भी चैतन्य महाप्रभु जी की कृपा से घाट का चिह है। सभी

लोग इसे 'माधाई - घाट' से पुकारते हैं।"

( 11 ) **बारकोना घाट** — माधाई - घाट से 20 हाथ उत्तर में अवस्थित है। विश्वकर्मा जी ने श्रीमहाप्रभु जी की आज्ञा से इस घाट को निर्माण किया था। इस घाट पर पंचतीर्थलिंग के साथ पंचशिवालय भी विद्यमान थे। इस घाटपर श्रीमन्महाप्रभु जी ने दिग्विजयी का अभिमान चूर्ण करके उस पर कृपा की थी।

* * * * * * *

श्रीलगुरुदेव